स्वयं बनाईये अपनी राह

सुगम राह पर चलने का आनन्द तो सभी लेते हैं, परन्तु वो मनुष्य जो कॉटों पर चलकर दूसरों के लिए राह बनाता है समपूर्ण आनन्द का हकदार बन जाता है, बनी बनाई राहों पर चलना तो आसान है परन्तु नई राह बनाकर उस पर सबको चलाने का सुख तो अनुपम है।

आपको जानना होगा कि दूसरों द्वारा बनाई गई राह पर आप सफलता पूर्वक नहीं चल पायेंगे क्योकि दूसरों ने राह अपनी क्षमता अनुसार बनाई है, जबकि आपकी क्षमता उनसे भिन्न है यह जरूरी नही कि जो वे कर सके वो आप भी कर सको वा जो वे न कर सके वो आप भी न कर सको, प्रत्येक मनुष्य के विचार, संस्कार, बुद्धि , शारीरिक बल व योग्यताएँ अलग- अलग है, इसलिए सबके मार्ग में भिन्नता होगी ही आप जिस क्षेत्र में भी प्रवेश कर रहे हैं यह जरूरी है कि उस पर पूर्व में चलने वालों की स्थिति का आप अध्ययन करें और फिर अपनी योग्यता अनुसार अपनी राह बनायें।

जब आप अपनी स्वयं की राह बनायेंगे तो यह जरूरी नही है कि आपकी राह आसान हो परन्तु यदि आप दृढ संकल्पधारी है, यदि आपमें त्याग का बल है, यदि आपमें दूसरों को साथ ले चलने की शक्ति है तो आप कठिन राह पर चलकर भी सफलता को प्राप्त करेंगे।

अपनी राह बनाने के मार्ग में आपको कंटिली रास्ता भी साफ करना पड़ेगा। आपके पग लहू- लुहान भी हो सकते हैं शायद आपको रास्ता बनाने का सुख भी प्राप्त न हो परन्तु आप दूसरों के लिए भी रास्ता बना रहे हैं व अपने लिए भी, इसलिए आपको धैर्यता व सहन शीलता का परिचय तो देना ही होगा।

तो हिम्मत और उमंग के साथ अपने लिए एक नवीन पथ का निर्माण करें एक ऐसा पथ जो सरल भी हो और मंजिल पर ले जाने वाला भी एक ऐसी राह जो आपको आनन्दित भी करें और आपकी यात्रा भी निंविघ्न बनायें, एक ऐसा मार्ग जिस पर आप निर्भीकता पूर्वक आगे बढ सके और जो सबके लिए कलयाणकारी हों।

ओम शान्ति

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com